शंखपुष्पी

(*Evolvulus alsinoides*)

कुल	:	कन्वल्वुलेसी
आयुर्वेदिक नाम	:	शंखपुष्पी
यूनानी नाम	:	सखाहोली
हिन्दी नाम	:	फूली, शरिखपुष्पी
अंग्रेजी नाम	:	English Speed- Wheel
व्यापारिक नाम	:	शंखपुष्पी
उपयोगी भाग	:	सम्पूर्ण पादप

औपचारिक / औषधीय उपयोग

शंखपुष्पी के सम्पूर्ण पादप से बनाये गये काढ़े का उपयोग स्नायुदौर्बल्य तथा स्मृतिहानि के उपचार में किया जाता है। यह पौधा रक्तशोधक के रूप में तथा खूनी बवासीर में भी उपयोगी है। मस्तिष्क टॉनिक के रूप में इसके फूलों को चीनी के साथ खाया जाता है। पुराने श्वासनली–शोथ तथा दमा के रोगियों को इसकी पत्तियों से बनी सिगरेटों के धूम्रपान से राहत मिलती है। इसके उपयोग से त्वचा में निखार तथा आवाज में भी सुधार होता है। यह आंतों के कीड़ों से छुटकारा दिलाता है तथा स्मरण शक्ति बढ़ाता है।

वितरण

प्राकृतिक रूप से यह पौधा भारत में लगभग सभी जगह खुले क्षेत्रों तथा घास के मैदानों में पाया जाता है। मैदानी क्षेत्रों के अलावा यह हिमालय पर 1500 मीटर की ऊंचाई तक के क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है।

आकारिकी तथा लक्षण विज्ञान

यह एक वार्षिक अथवा बहुऋतुजीवी शाकीय पौधा है। इसके पत्रक 2.5 से 5 से. मी. लम्बे, दीर्घवृत्ताकार एवं आधार पर गोलाकार होते है। इसकी पत्तियां लम्बे, घने तथा फैले हुए सफेद बालों से ढ़की होती है। मानसून की दो–तीन बौछारों के पश्चात् जुलाई–अगस्त माहों में इसके पौधे निकल आते है। सामान्यतया किसी वृक्ष अथवा झाड़ी के नीचे इसके पौधे प्रचुर संख्या में पाये जाते है। अगस्त के प्रथम सप्ताह में ही पौधे में पुष्पन आरंभ हो जाता है। अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह तक फल लगने प्रारंभ हो जाते है। यह पौधा दिसम्बर तक सूख जाता है।

पुष्पीय लक्षण

इसके पुष्प नीले, गहरे बैंगनी से श्वेत बैंगनी रंग के होते है तथा अक्षीय स्थिति में होते है। वे एक लम्बे डंठल पर एकाकी अथवा युग्म में लगे होते है। इसमें दो वर्तिकायें होती है तथा प्रत्येक वर्तिका द्विशाखीय होती है। इसके फल गोलाकार होते है जिसके अंदर चार संपुटिकायें होती है जिनमें गहरे भूरे अथवा काले चिकने बीज होते है।

जलवायु एवं मृदा

यह पौधा छायादार स्थानों तथा आर्द्र जलवायु में आसानी से उग जाता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में इसकी वृद्धि धीमी हो जाती है तथा पौधो का विकास रूक जाता है। भारत के उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में 1800 मीटर की ऊंचाई तक इसकी खेती की जा सकती है।

प्रवर्द्धन सामग्री

शंखपुष्पी के पौधे बीज से तैयार किये जा सकते है। इसके प्राकृतिक पर्यावासों से अक्टूबर–नवम्बर माह में बीज संग्रहण किया जाना चाहिए।

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक द्वारा पौध तैयार करना

शंखपुष्पी के बीजों पर कठोर आवरण होता है। इस कठोर आवरण को तोड़ने के लिए बीजों को हाथों से मसला जाता है। ऐसा करने पर बीजों में अंकुरण बढ़ जाता है। नर्सरी में पौध भंडार तैयार करने के लिए पॉलीथिन थैलियों में सीधे बीज बोये जा सकते है। प्रत्येक थैली में दो बीज बोना चाहिए। बीज 0.5 से.मी. गहराई पर बोये जाते है। बीज बुवाई जून–जुलाई में करनी चाहिए। एक हेक्टेयर क्षेत्र में शंखपुष्पी की खेती के लिए बीजों की लगभग 200 ग्राम मात्रा की आवश्यकता होती है।

क्षेत्र तैयारी

जिस प्रकार सब्जियों की खेती के लिए जुताई तथा पाटा कर भूमि को तैयार किया जाता है, उसी तरह शंखपुष्पी की खेती के लिए भी भूमि की तैयारी की जाती है। जुताई के पश्चात् पाटा चलाकर भूमि को समतल कर लेना चाहिए। रोपण के पूर्व क्षेत्र में उग रहे खरपतवार को हाथ से निंदाई–गुड़ाई कर पूरी तरह से निकाल देना चाहिए। अच्छी उपज के लिये खेत की मिट्टी में रोपण पूर्व ही 10 टन प्रति हेक्टेयर के मान से गोबर की सड़ी खाद / कम्पोस्ट / वर्मीकम्पोस्ट मिला देना चाहिए।

रोपाई तथा रोपण अंतराल

वर्षा ऋतु में जब खेत की मिट्टी में अच्छी नमी हो जाये, तब जुलाई–अगस्त माह में शंखपुष्पी के नर्सरी में तैयार किये गये पौधों की रोपाई 25 से.मी. X 25 से.मी. के अंतराल पर की जाती है। इस रोपण अंतराल पर प्रति हेक्टेयर रोपित पौधों की संख्या लगभग 1,60,000 होगी।

अंतरासस्यन

शंखपुष्पी के साथ गुग्गल के प्रायोगिक अंतरास्यन में पाया गया है कि इन दोनों औषधीय प्रजातियों की खेती साथ–साथ की जा सकती है तथा इससे इन प्रजातियों की बढ़त पर कोई प्रतिकूल प्रभाव भी नहीं पड़ता है। इसके अलावा बाजरा, ग्वार अथवा मूंग के साथ भी शंखपुष्पी का अंतरासस्यन किया जा सकता है।

सिंचाई

शुष्क मौसम में पांच दिनों के अंतराल पर सिंचाई से अधिकतम बढ़त तथा बायोमास उत्पादन पाया गया है। वर्षाकाल में सिंचाई तभी की जाये, जब आवश्यकता हो।

खरपतवार नियंत्रण

फसल के पूरे मौसम में 15 से 20 दिन के अंतराल पर हाथ से निंदाई तथा कुदाली से गुड़ाई करनी चाहिए। इससे खरपतवार पर नियंत्रण रहेगा तथा मृदा वातन (Soil aeration) में वृद्धि से पौधों की बढ़त भी अच्छी होगी।

रोग एवं कीट नियंत्रण

शंखपुष्पी की फसल पर किसी विशेष रोग अथवा कीट का प्रकोप होना नहीं पाया गया।

विदोहन

शंखपुष्पी खरीफ की फसल है तथा यह वर्षाकाल के 4 माहों में अपना फसल चक्र पूरा कर लेती है। जुलाई माह में रोपित पौधे अपनी बढ़त सितम्बर–अक्टूबर तक पूर्ण कर लेते है तथा फसल कटाई का यही उपयुक्त समय है।

विदोहनोत्तर प्रबंधन

विदोहन उपरांत प्राप्त शंखपुष्पी के ताजे कटे पौधे शीघ्र नाशवान होते हैं। अतः उनको अच्छी तरह सुखाकर बोरों में भरकर विक्रय होने तक ठंड़े एवं शुष्क स्थान पर सुरक्षित भण्डारण करना चाहिए।

उपज

शुद्ध फसल के रूप में प्रति हेक्टेयर उत्पादन लगभग 18 क्विन्टल (ताजा भार) होता है जो सूखने के बाद एक तिहाई रह जाता है।

उत्पादन लागत

शंखपुष्पी की खेती में प्रति हेक्टेयर लगभग 20 से 30 हजार रूपये की लागत आती है।

रासायनिक घटक

शंखपुष्पी के पौधें में Scopoletin, Umbelliferone, Scopolin और 2-methyl-1,2,3,4-butanetetrol जैसे यौगिक पाये जाते है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्कः 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्सः 0761–2661304

ई–मेलः rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेबः http://www.rcfccentral.org

शंखपुष्पी

(*Evolvulus alsinoides*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020